Dr Raj Gopal
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.

Nayaya Inference (Lecture-5)

न्याय दर्शन : अनुमान प्रमाण (व्याख्यान-5)

प्राचीन न्याय के अनुसार अनुमान के तीन प्रकार माने गये हैं। (i) पूर्ववत (ii) शेषवत (iii) सामान्यतोदृष्ट

(i) पूर्ववत अनुमान :- पूर्ववत अनुमान उस अनुमान को कहा जाता है जिसमें ज्ञात कारण के आधार पर अज्ञात कार्य का अनुमान किया जाता है। आकाश में बादल को देखकर वर्षा का अनुमान पूर्ववत अनुमान है।

(ii) शेषवत अनुमान :- यह वह अनुमान है जिसमें ज्ञात कार्य के आधार पर अज्ञात कारण का अनुमान किया जाता है। जैसे मलेरिया बीमारी को देखकर मादा एनोफिलिज मच्छर का अनुमान। सुबह में चारो ओर पानी जमा देखकर रात में वर्षा होने का अनुमान। इस प्रकार से शेषवत अनुमान में कार्य के प्रत्यक्ष ज्ञात से अप्रत्यक्ष कारण का अनुमान किया जाता है।

(iii) सामान्यतोदृष्ट अनुमान :- अनुमान का यह भेद उपरोक्त प्रकार के अनुमान से भिन्न है। अनुमान का यह भेद कारण-कार्य संबंध के ज्ञान पर आधारित न होकर सह-अस्तित्व के ज्ञान पर आधारित है। दो वस्तुओं को यदि साथ-साथ देख रहे हैं तब एक को देखकर दूसरे का अनुमान करना सामान्यतोदृष्ट है। जैसे किसी पशु की सींगों को देखकर उसके खुरों के फटे होने का अनुमान करना सामान्यतोदृष्ट है। यदि दो व्यक्ति राम और मोहन हमेशा एक साथ पाते हैं तो राम को देखकर मोहन का अनुमान करना सामान्यतोदृष्ट है।

नव्य न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान के तीन भेद प्राप्त होते हैं - (i) केवलान्वयी (ii) केवल व्यतिरेकी (iii) अन्वय व्यतिरेकी अनुमान

(i) केवलान्वयी अनुमान :- जिस अनुमान का आधार अन्वय व्याप्ति है। दूसरे शब्दों में जिस व्याप्ति की स्थापना भावात्मक उदाहरणों से होती है तब उस अनुमान को केवलान्वयी अनुमान कहते हैं। अन्वय का अर्थ है साहचर्य। इसमें हेतु और साध्य में नियत साहचर्य देखा जाता है जैसे,

सभी प्रमेय अभिधेय हैं।
घट प्रमेय है।
अतः घट अभिधेय है।

(ii) केवल व्यतिरेकी अनुमान :- जिस अनुमान में व्याप्ति की स्थापना निषेधात्मक उदाहरणों द्वारा संभव हो उस अनुमान को केवल व्यतिरेकी अनुमान कहा जाता है। जैसे,

सभी आत्मा रहित वस्तुयें चेतनारहित हैं
सभी जीव चेतन हैं।
इसलिए सभी जीवों में आत्मा है।

(iii) अन्वय-व्यतिरेकी :- जिस अनुमान में व्याप्ति की स्थापना अन्वय और व्यतिरेक (भावात्मक और निषेधात्मक) दोनों विधियों से हो उस अनुमान को अन्वय व्यतिरेकी अनुमान कहते हैं।

(1) जहाँ धुआँ है वहाँ आग है।
पर्वत पर धुआँ है।
अतः पर्वत पर आग है।

(2) जहाँ आग नहीं है वहाँ धुआँ नहीं है।
पर्वत पर धुआँ है।
अतः पर्वत पर आग है।

यह अन्वय व्यतिरेकी अनुमान है इसके आधार में अन्वय और व्यतिरेक दोनों व्याप्ति है।

Scanned with CamScanner